आनन्द आयो रे .....

आनन्द आयो रे सत गुरूसा मोपे रंग बरसायो रे, आनन्द आयो रे.....

पाँच पच्चीस मिली सब सखियाँ, होड़म होड़ मचायो रे,

ज्ञान को चंग ज्ञान सू खडक्यो, मंगल गायो रे, आनन्द आयो रे.....

सूती घोर नींद में कि एक बंशी शोर मचायो रे,

उधर बंशी की कुंज गलिन में, रास रचायो रे, आनन्द आयो रे.....

काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह तो सुनता ही उधायो रे,

क्या जानूँ क्या कौन गलिन में, मुखड़ो छुपायो रे, आनन्द आयो रे.....

देवनाथ गुरू दया करी तब ऐसो फाग खिलायो रे,

मानसिंह चढ़ सोहम शिखर पर ढोल घुरायो रे, आनन्द आयो रे.....

आरती इस विध गुरू की करिए .....

आरती इस विध गुरू की करिए, सेवा इस विध ओम की करिए ।

धूप, दीप, नैवेद्य, पुष्प, फल, गुरू के सनमुख धरिए । आरती इस विध..

गाय–गाय गुण, प्रेम प्रीत से, भव–सागर से तरिए । आरती इस विध..

गद्‌गद् कण्ठ अंग पुलकावलि, प्रेम नीर चक भरिए । आरती इस विध..

श्रीयदुवर की चरण–सरण गई, कलि मल से क्यों डरिए । आरती इस विध..

सालगराम दया कर ली, पाप ताप सब हरिये । आरती इस विध..